

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया के छात्रों और जाने-माने रेडियो जॉकी ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रमुख विषयों पर 'इनोवेटिव मैसेजिंग डिज़ाइन' और 'मीडिया एडवोकेसी' लर्निंग के लिए किया सहयोग**

नई दिल्ली, 27 अप्रैल 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के 'सेंटर फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप' (CIE) ने, जेएमआई के 'फैकल्टी ऑफ़ डेंटिस्ट्री' और 'यूनिसेफ इंडिया' के सहयोग से, 24 और 25 अप्रैल 2026 को विश्वविद्यालय में एक दो-दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यशाला में जेएमआई के विभिन्न विभागों—जिनमें डेंटिस्ट्री; हेल्थकेयर और हॉस्पिटल मैनेजमेंट; हिंदी मास मीडिया; कल्चर, मीडिया और गवर्नेंस; और डिजिटल मार्केटिंग (CIE) शामिल रहे—जिनके 30 से अधिक छात्र एक साथ आए। इनका उद्देश्य निजी FM स्टेशनों के रेडियो जॉकी (RJs) से सीखना और उनके साथ प्रशिक्षण प्राप्त करना, तथा 'जामिया रेडियो' के प्रमुख के साथ संवाद करना था। इस पहल का मुख्य लक्ष्य रेडियो और डिजिटल मंचों के माध्यम से टीकाकरण और 'गैर-संक्रामक रोगों' (NCDs) पर सार्वजनिक स्वास्थ्य संचार को सुदृढ़ बनाना था।

जेएमआई के माननीय कुलपति, प्रो. मज़हर आसिफ़ ने प्रतिभागियों को दिए अपने संदेश में इस बात पर ज़ोर दिया कि शैक्षणिक संस्थान, सार्थक सहयोग के माध्यम से ज्ञान को व्यावहारिक उपयोग से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी पहल छात्रों को टीकाकरण और NCDs जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य विषयों से जुड़ने में सक्षम बनाती हैं; साथ ही, वे व्यापक सामाजिक प्रभाव के लिए रेडियो और डिजिटल मंचों का लाभ उठाते हुए, साक्ष्य-आधारित संचार कौशल भी विकसित करते हैं।

जामिया के रजिस्ट्रार, प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने कार्यशाला में उपस्थित लोगों को दिए अपने संदेश में इस बात को रेखांकित किया कि अनुभवात्मक शिक्षा और सामाजिक जुड़ाव के लिए सहयोगी शैक्षणिक मंच अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी पहल छात्रों को ज्ञान को सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दों पर प्रभावी संचार में बदलने के लिए सशक्त बनाती हैं; जिससे आधुनिक मीडिया के माध्यम से पहुंच (outreach) बढ़ती है और एक जागरूक तथा स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान मिलता है।

'विश्व टीकाकरण सप्ताह 2026' की थीम—"हर पीढ़ी के लिए, टीके हैं कारगर" (For Every Generation, Vaccines Work)—के अनुरूप, इस कार्यशाला ने जीवन के हर पड़ाव पर व्यक्तियों और परिवारों की सुरक्षा में टीकों की भूमिका को और अधिक मज़बूती प्रदान की। इसने बच्चों और किशोरों में NCDs की रोकथाम, प्रारंभिक जागरूकता और स्वस्थ व्यवहारों के बढ़ते महत्व पर भी विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया। वर्कशॉप में बोलते हुए, UNICEF इंडिया की कम्युनिकेशन, एडवोकेसी और पार्टनरशिप की प्रमुख ज़फ़रीन चौधरी ने कहा, "भारत का टीकाकरण कार्यक्रम हर वर्ष लाखों बच्चों और गर्भवती महिलाओं तक पहुँचता रहता है, जो हमारे मज़बूत सिस्टम और प्रतिबद्धता को दिखाता है। टीके हर पीढ़ी की रक्षा करते हैं और समानता का एक अहम पैमाना बने हुए हैं, खासकर उन बच्चों तक पहुँचने में जो अभी भी छूट जाते हैं। गैर-संक्रामक बीमारियों (NCDs) पर शुरुआती ध्यान, जागरूकता और देखभाल की ज़रूरत होती है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया जैसे पार्टनर के साथ काम करके, युवा कम्युनिकेटर्स को जोड़कर, और

रेडियो और डिजिटल मीडिया जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करके, हम स्वस्थ आदतों के बारे में जागरूकता और समझ को और बढ़ा सकते हैं।”

स्वागत वक्तव्य देते हुए, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सेंटर फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप के डायरेक्टर प्रो. रिहान खान सूरी ने कहा, “शैक्षणिक संस्थान ज्ञान को व्यवहार से जोड़ने में अहम भूमिका निभाते हैं। इस सहयोग के ज़रिए, छात्र टीकाकरण और बचपन की NCDs जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य विषयों से सीधे जुड़ते हैं, और ऐसी कम्युनिकेशन तैयार करते हैं जो सबूतों पर आधारित और प्रासंगिक हो। रेडियो और डिजिटल प्लेटफॉर्म मिलकर इन संदेशों की पहुँच और असर को समुदायों तक और बढ़ा सकते हैं।”

इस कार्यशाला में छात्र, रेडियो जॉकी, मीडिया पेशेवर और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एक साथ आए। यहाँ टीकाकरण और NCDs पर खास सत्र हुए, जिनमें इस बात पर ज़ोर दिया गया कि युवाओं की आवाज़ें समुदायों के भीतर भरोसा बनाने, गलत जानकारी का मुकाबला करने और लोगों के व्यवहार को सही दिशा देने में मदद कर सकती हैं।

यह पहल UNICEF इंडिया के उन लगातार प्रयासों का हिस्सा है, जिनके तहत वह शैक्षणिक संस्थानों और मीडिया प्लेटफॉर्म के साथ मिलकर काम करता है, ताकि सबूतों पर आधारित कम्युनिकेशन को मज़बूत किया जा सके, लोगों का भरोसा जीता जा सके, और समुदायों में स्वस्थ आदतों को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद  
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी